IJAER/ May-June 2023/Volume-12/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

जनपद मेरठ के सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यदबाव के प्रभाव का अध्ययन"

➢ परवेज अली, शोधार्थी, शारीरिक शिक्षा विभाग , बीर टिकेन्द्रजीत विश्वविद्यालय, मणिपुर
➢ डॉ0 योगेश कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा विभाग , बीर टिकेन्द्रजीत विश्वविद्यालय, मणिपुर

सार–

प्रस्तुत शोध पत्र मेरठ जिले के शिक्षकों की मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यदबाव के प्रभाव पर आधारित है। विभिन्न मनोवैज्ञानिक कारक एक दूसरे को किसी न किसी प्रकार से प्रभावित करते है। यह अत्यावश्यक है कि विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास हेतु मनोवैज्ञानिक कारकों से शिक्षक परिचित हों। मानसिक स्वास्थ्य के रूप में शिक्षक अपनी क्षमताओं को महसूस करता है। शिक्षक क्षमताओं के द्वारा मानसिक व बौद्धिक तनाव को दूर कर सकता है। मानसिक स्वास्थ्य व्यवहार से सम्बन्धित होता है जिसके द्वारा जीवन के सामान्य तनाव से निपटा जा सकता है। विभिन्न विचारों व बाधाओं के मध्य संतुलित व्यवहार बनाया जा सकता है। शोध से प्राप्त निष्कर्षों के अनुसार मानसिक स्थिति और शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सह सम्बन्ध और उच्च एवं निम्न मानसिक स्थिति वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया है।

प्रस्तावना–

शिक्षा राष्ट्र में दीर्घकालीन विकास हेतु मानव शक्ति को तैयार करने का एक शक्तिशाली साधन है। शिक्षा किसी देश का आधार है। सीखने तथा सीखाने की प्रक्रिया में तीन घटक कार्यान्वित होते है–शिक्षक, शिक्षार्थी तथा पाठ्यवस्तु। अध्यापन का कार्य शिक्षक द्वारा सम्पादित किया जाता है। शिक्षा से सम्बन्धित प्रत्येक योजना का सफल क्रियान्वयन शिक्षकों के वैयक्तिक व्यवहार शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं व कार्यनिष्ठा पर निर्भर करता है। आज शिक्षक पर केवल शिक्षा प्रदान करने का ही भार नहीं है अपितु अनेक कार्य जैसे जनगणना, नामांकन कार्य आदि। अधिक कार्य दबाव के कारण उनके मानसिक स्वास्थ्य पर कुप्रभाव पड़ रहा है, जिससे अध्यापन कार्य के प्रति उनकी अरूचि बढ़ती जा रही है। गत वर्षों से मानसिक अस्वस्थता बड़ी तीव्र गति से बढ़ रही है, जिसने सामाजिक, आर्थिक एवं राष्ट्रीय विकास को अधिक प्रभावित किया है और गम्भीर समस्यायें उत्पन्न कर दी है। मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं ने राष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण स्थान ले लिया है। यदि शिक्षक मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं है तो वह छात्रों की समस्याओं को हल नहीं कर सकता और न ही समुचित निर्देशन दे सकता है, शिक्षक के असमायोजन का छात्रों पर प्रभाव अच्छा नहीं पड़ता।

कुछ अध्ययनों के अनुसार ज्ञात हुआ है कि अधिकांश सरकारी व गैर सरकारी शिक्षक अध्यापन को एक तनावपूर्ण व्यवस्था मानते है। छात्रों, सहयोगियों के साथ प्रतिदिन की अल्पक्रिया और शिक्षक का सतत और खण्डित माँगें, अधिकांशतः थका देने वाला दबाव उत्पन्न करती है जब यह दबाव अत्यधिक कठोर हो जाता है तो इनके नकारात्मक, शारीरिक, मानसिक, व्यावसायिक परिणाम प्राप्त होते है। व्यवसाय में अत्यधिक मात्रा में तनाव, सन्तोष की कमी अध्यापकों में कार्य असन्तुष्टि को जन्म देती है।

शोध उद्देश्य

अनुसंधानकर्ता ने अपने शोधकार्य हेतु निम्नलिखित शोध उद्देश्य निर्धारित किए हैं–

- शिक्षकों की मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यदबाव के प्रभाव का अध्ययन।
- पुरूष शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यदबाव के प्रभाव का अध्ययन करना।
- महिला शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यदबाव के प्रभाव का अध्ययन करना।
- सरकारी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षको के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यदबाव के प्रभाव का अध्ययन करना।
- गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यदबाव के प्रभाव का अध्ययन।
- सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यदबाव के प्रभाव का अध्ययन करना।
- गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यदबाव के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ

- शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यदबाव का प्रभाव पडता है।
- सरकारी विद्यालयो में कार्यरत पुरूष शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यदबाव का प्रभाव पडता है।
- गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यदबाव का प्रभाव पडता है।
- सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यदबाव का प्रभाव पडता है।
- गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यदबाव का प्रभाव पडता है।

शोध प्रविधियाँ :–

विधि :–प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

न्यादर्श :–न्यादर्श के अन्तर्गत यादृच्छिक विधि का प्रयोग करते हुए मेरठ जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के 100 विद्यालयी शिक्षकों का चयन किया गया है।

उपकरणः–

प्रस्तुत अध्ययन में अप्रमापीकृत स्वनिर्मित प्रश्नावली (कार्यदबाव व मानसिक स्वास्थ्य अध्यापक अभिवृत्ति मापनी) का प्रयोग आँकडों के संग्रहण हेतु किया गया है।

प्रदत्त संचयन :–

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने शोध समस्या पर अध्ययन के लिये शोधकर्त्री ने **मेरठ जिले** के 2 सरकारी व 2 गैरकारी विद्यालयों के100 शिक्षकों को लिया गया हैं। समस्या के अध्ययन के लिये "शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यदबाव के प्रभाव के अध्ययन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली' का प्रयोग किया गया। इसमें कार्यदबाव (सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक) तथा मानसिक स्वास्थ्य (सामाजिक, शैक्षिक, सन्तुलन) आदि आयामों को शामिल किया गया है। इनमें उत्तरों के लिये चार विकल्प रखे गये –सदैव, कभी–कभी, कह नहीं सकते एवं कभी नहीं। सकारात्मक प्रश्नों के किये गये इस परीक्षण में शिक्षकों व प्रधानाध्यापक का पूर्ण सहयोग प्रदान किया तथा प्रमाण–पत्र प्रदान किये। इस सहयोग के लिये मैंने उनका आभार व्यक्त कर धन्यवाद दिया।

परिणाम :–

परिकल्पना–1 ''शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्य दबाव का प्रभाव पड़ता है।''

क्र.सं.	श्रेणी	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	सहसम्बन्ध	स्वीकृत / अस्वीकृत
1.	विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य	100	26.21	0.27	स्वीकृत
2.	विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों का कार्य दबाव	100	24.75		

परिकल्पना–2 ''सरकारी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्य दबाव का प्रभाव पड़ता है।''

क्र.सं.	श्रेणी	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	सहसम्बन्ध	स्वीकृत/ अस्वीकृत
1.	सरकारी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य	25	26.52	0.46	स्वीकृत
2.	सरकारी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों का कार्य दबाव	25	23.64		

परिकल्पना–3 ''सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्य दबाव का प्रभाव पड़ता है।''

क्र.सं.	श्रेणी	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	सहसम्बन्ध	स्वीकृत/ अस्वीकृत
1.	सरकारी विद्यालय की महिला शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य	25	27.04	–0.21	स्वीकृत
2.	सरकारी विद्यालय की महिला शिक्षकों का कार्य दबाव	25	24.92		

परिकल्पना–4 ''गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्य दबाव का प्रभाव पड़ता है।''

क्र.सं.	श्रेणी	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	सहसम्बन्ध	स्वीकृत/ अस्वीकृत
1.	गैर सरकारी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य	25	25.20	0.36	स्वीकृत
2.	गैर सरकारी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों का कार्य दबाव	25	25.64		

परिकल्पना–5 ''गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्य दबाव का प्रभाव पड़ता है।''

क्र.सं.	श्रेणी	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	सहसम्बन्ध	स्वीकृत/ अस्वीकृत
1.	गैर सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य	25	26.56	0.50	स्वीकृत
2.	गैर सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों का कार्य दबाव	25	25.68		

परिणामों की विवेचना :–

- परिकल्पना–1 में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं में महिलाओं के यौन उत्पीड़न से सम्बन्धित कानूनी प्रावधानों के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया जिसमें सरकारी विद्यालय की छात्राओं व निजी विद्यालय की छात्राओं की जागरूकता में अंतर पाया गया है।
- परिकल्पना–2 में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं में महिलाओं के शारीरिक उत्पीड़न से सम्बन्धित कानूनी प्रावधानों के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया जिसमें सरकारी विद्यालय की छात्राओं व निजी विद्यालय की छात्राओं की जागरूकता में अंतर पाया गया है।

- परिकल्पना–3 में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं में महिलाओं के सांवेगिक उत्पीड़न से सम्बन्धित कानूनी प्रावधानों के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया जिसमें सरकारी विद्यालय की छात्राओं व निजी विद्यालय की छात्राओं की जागरूकता में अंतर पाया गया है।
- परिकल्पना–4 में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं में महिलाओं के आर्थिक उत्पीड़न से सम्बन्धित कानूनी प्रावधानों के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया जिसमें सरकारी विद्यालय की छात्राओं व निजी विद्यालय की छात्राओं की जागरूकता में अंतर पाया गया है।
- परिकल्पना–5 में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं में महिलाओं के सामाजिक उत्पीड़न से सम्बन्धित कानूनी प्रावधानों के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया जिसमें सरकारी विद्यालय की छात्राओं व निजी विद्यालय की छात्राओं की जागरूकता में अंतर पाया गया है।

शैक्षिक निहितार्थः–

शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में निरन्तर अन्वेषण के परिणामस्वरूप समाज में एक नवीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के उद्देश्य को पूर्णता प्रदान की जा सकती है। शिक्षा जगत में निरन्तर अनुसंधान के माध्यम से विभिन्न शैक्षिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं को नश्चित रूप से परिभाषित करके उनके निराकरण का मार्ग दिखाया जा सकता है। अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर संरचनात्मक परिवर्तन को एक नई दिशा प्रदान करने का प्रयास किया जा सकेगा। वर्तमान समय में विभिन्न वर्गो की छात्राओं को महिला उत्पीड़न सम्बन्धित कानूनी प्रावधानों के प्रति जागरूकता बनाए रखने के प्रति संवेदनशील व सकारात्मक होने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

- अरोड़ा, रीता एवं मारवाह, सुदेश (2001) : ''शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी'', 23–भगवान दास मार्केट, चौड़ा रास्ता, मेरठ.
- एलिजाबेथ, बी. हर्लोक (1967) : ''विकास मनोविज्ञान, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली'', शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, द्वितीय संस्करण.
- भार्गव, उषा (1993) :''किशोर मनोविज्ञान'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर.
- भटनागर, आर. पी. (2003) :''शिक्षा अनुसंधान'', इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, .
- भटनागर, सुरेश (1993) :''अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार'', इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ (चतुर्थ संस्करण).
- छंगाणी पुरूषोत्तम :''अधिकार दिलाए उत्पीड़न से मुक्ति'' राजस्थान पत्रिका, 8 मार्च 2006 (पृ0 1)
- गैरेसन, काली सी. (1986) : ''साईकॉलॉजी ऑफ एडोल्सेन्ट'', पांचवां संस्करण, प्रेन्टिस हॉल, नई दिल्ली, पृ. सं. 105 ।
- निशान्त, मीनाक्षी, (2008) आधुनिक और महिला उत्पीडन, नई दिल्ली, हिन्दी बुक डिपों.
- गुप्ता शिप्रा (2017) ''शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यदबाव के प्रभाव का अध्ययन'', इण्डियन जर्नल आफ रिसर्च, वाल्यूम–6, इश्यू–6।